प्रस्तुत करना चाहती है :

1. प्रेस परिषद् अधिनियम में संशोधन करने का बिल ।
2. राष्ट्रीय सम्मान के प्रति अनादर रोक बिल, 1970 ।
3. विदेशी सहायता (नियमन) बिल, 1970 ।
4. फसल बीमा बिल, 1970 ।
5. समाचार-पत्र वित्त निगम की स्थापना के लिए बिल ।
6. अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम 1955 में संशोधन के लिये बिल ।
7. एन० सी० डी० सी० (संशोधन) बिल, 1970 ।
8. भारत में चार अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों के प्रबन्ध के लिये एक स्वायत्तशासी सांविधिक निगम स्थापित करने के लिये बिल ।

48. संसद् सदस्यगण ! आप ऐसे समय में यहां इकट्ठा हो रहे है जबकि लोग बड़ी आशाएं लगाए बैठे हैं । आप उनकी आशाओं और आकांक्षाओं का सही मूल्यांकन करें और अपनी विवेकशीलता तथा बुद्धिमत्ता से उन्हें पूरा करने का प्रयत्न करें ।

12.40½ hrs.

OBITUARY REFERENCES

MR. SPEAKER : Hon. Members, I have to inform the House of the sad demise of three of our friends, namely Shri S. R. Rane, Shri M. K. Jinachandran and Shri L. S. Bhatkar.

Shri S. R. Rane was a sitting Member of this House from Buldana constituency of Maharashtra. He was one of the senior Members of this House and had been continuing as a Member right from the First Lok Sabha During the 18 years of his membership of this House, he served on a number of Parliamentary Committees such as the Estimates Committee and the Committee on Government Assurances and others. He was a Member of the Panel of Chairmen for a number of years. He was a Government Deputy Chief hip during the years 1957-66. He was a very able parliamentarian and took active part in the proceedings of this House and the Committees. In spite of ill-health, he had been attending the House during the last session. He was also an educationist who served the cause of many educational institutions and education societies of Maharashtra. He passed away at Bhusaval on the 20th January, 1970, at the age of 69. The House will be missing a very amiable and a lovable personality.

Shri M. K. Jinachandran was Member of the Central Legislative Assembly during the years 1945-47 and of Second Lok Sabha during the years 1957-62. He passed away at Vellore on the 31st January, 1960 at the age of 53.

Shri L. S. Bhatkar was a Member of the Constituent Assembly of India, Provisional Parliament, First, Second and Third Lok Sabha during the years 1946-1967. He passed away at Chikhili, District Buldana, on the 7th February, 1970, at the age of 69.

We deeply mourn the loss of these friends and I am sure the House will join me in conveying our condolences to the bereaved families.

प्रधान मंत्री तथा सदन नेता (श्रीमती इंदिरा गांधी) : अध्यक्ष महोदय, श्री राणे के निधन से लोक सभा के माननीय सदस्यों को खेद है । वे सन् 52 से लगातार इस सदन के सदस्य थे और हमारे एक पुराने साथी थे । उन्हें शिक्षा तथा समाज-कल्याण कार्यों मे विशेष रुचि थी । उन्होंने इन क्षेत्रों में कई संस्थाएं भी स्थापित कीं । संसद् की समितियों के कार्य में उनकी गहरी दिलचस्पी और योगदान सराहनीय है ।

महाराष्ट्र को एक और क्षति श्री भटकर के स्वर्गवास से हुई । वे संविधान सभा के सदस्य थे और पहले तीन आम चुनावों में जीतकर इस सदन में आए । सामाजिक प्रगति

के प्रति वह कटिबद्ध थे और अनुसूचित जातियों के कल्याण-कार्यों में वे अग्रसर रहे।

श्री जीनचन्द्रन दूसरी लोक सभा के सदस्य थे। वे केरल में कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता थे। सहकारिता आन्दोलन में और केरल के पिछड़े हुए क्षेत्रों और वर्गों की दशा सुधारने में उनका विशेष लगाव था।

अध्यक्ष महोदय, मेरी आप से प्रार्थना है कि हमारी समवेदनाएं हमारे इन दिवंगत साथियों के शोक संतप्त परिवारों तक पहुंचा दें।

डा० राम सुभग सिंह (बक्सर) : श्रीमन्, श्री राणे के निधन से हमें अपार दुःख हुआ और जैसा आपने बताया श्री राणे जी संसद् के एक ऐसे सदस्य थे जिनकी तुलना का दूसरा सदस्य नजर नहीं आता। वे एक शांत प्रकृति के और बड़े कर्मठ सदस्य थे और जिस किसी भी कमेटी की सदस्यता अथवा अध्यक्षता उन्होंने की उसमें उन्होंने अपनी ऐसी अमिट छाप डाली जिसको सभी लोग याद रखेंगे। जिन दिनों वे डिप्टी चीफ ह्विप थे उन दिनों वे बराबर शांत स्वभाव से यहां बैठे रहते थे और यहां सदन की किस तरह से कार्य प्रणाली चले उसको इस ढंग से प्रभावित करते थे कि जिसको देख कर सभी लोग प्रसन्न रहते थे। जैसा कि अभी आपने बताया, महाराष्ट्र में कतिपय शिक्षण संस्थाओं को उन्होंने स्थापना कराई और साथ ही हाल में उन्होंने एक कोआपरेटिव शुगर फैक्ट्री की स्थापना की और कदम उठाया था। अन्य अनेक कार्यों में भी उनकी बड़ी रूचि रहती थी और जिस किसी भी कार्य में वह अपना हाथ डालते थे उस कार्य को पूरा कराने की हिम्मत उनमें थी। ऐसे एक सदस्य जो शुरु से ही यानि पहली लोक सभा से पिछले सत्र तक यहां पर थे और अपने ढंग से वह सदन को प्रेरित करते थे, सबको प्रसन्न रखते थे, उन को खो कर सारे सदन और विशेषकर विरोध पक्ष की ओर से मैं उन के परिवार के सदस्यों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

श्री जीनचन्द्रन जी भी एक ऐसे ही बिरले सदस्य थे। वह केरल से आते थे और वाइनाड में उनका निकास स्थान था। पर दूसरी लोक सभा में यहां जो भी उनके सम्पर्क में आया उसको उन्होंने अपने सद्व्यवहार से प्रभावित किया और जब कभी उन्होंने हाउस में किसी विषय पर भाषण किया तो उन के तर्कों को सारे लोग मान्यता प्रदान करते थे।

श्री भटकर जी भी ऐसे ही एक मित्र थे जिन की हमें बराबर याद रहेगी क्योंकि अनुसूचित जाति के होते हुए भी उन्होंने न केवल अपने उन पिछड़े भाइयों की मदद करने के लिए अनेक कदम उठाए बल्कि सभी लोगों की सेवा करना वह अपना कर्तव्य समझते थे और ठीक उसी ढंग से यहां भी उन का व्यवहार था।

ऐसे इन साथियों के निधन से हमें अपार दुःख हुआ और हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को वह शांति प्रदान करें तथा उनके परिवार के सदस्यों के प्रति हम अपनी संवेदना प्रकट करते हैं।

SHRI RANGA (Srikakulam) : Mr. Speaker, the peasants in Maharashtra have lost a great champion in the death of Shri Rane. In this House whenever questions affecting agriculturists came up for discussion, Shri Rane was there ready to join issue with the authorities concerned, even though at that time, and for a very long time, he belonged to the ruling party.

He had the moral courage to refuse to be nominated again as Deputy Chief Whip when he felt that the Government behaved in a manner which was unbecoming of his status and experience in this House.

He also displayed his moral courage when he parted company with the ruling party and came over to the Opposition, although he found himself almost alone among the Congress Members of Parliament who came over to this side.

[Shri Ranga]

He did not appear to be such a brave man, but he was really brave among courageous people ; and he displayed that unique courage in circumstances in which many people were quailing in their shoes, in their sense of duty.

The loss of such a man is indeed a blow to this country, to our public life and to this House.

The other Members also used to make useful contributions. We all mourn their death.

श्री अटल बिहारी बाजपेयी (बलरामपुर) : अध्यक्ष महोदय, मृत्यु ने एक बार फिर हमारे ऊपर प्रहार किया है कि और हमारे एक साथी को हमारे बीच से उठा लिया है । कल तक श्री राणे हमारे मध्य थे । शांत, गम्भीर, संतुलित लेकिन प्रेम से परिपूर्ण उनका स्वभाव सभी सदस्यों के हृदय पर, चाहे वे किसी भी दल से सम्बन्धित हों, अपना असर डालता था । वे कुछ दिनों से बीमार चले आ रहे थे लेकिन उनका अन्त इतना सन्निकट है, इसकी आशंका नहीं की गई थी । सदन के सदस्य के नाते उनकी योग्यतायें सदैव स्मरणीय रहेंगी । सदन के बाहर उनकी सेवायें उल्लेखनीय हैं ।

एक वकील के नाते, सन् 42 की अगस्त की क्रान्ति में जो भी लोग पकड़े गए थे विशेषकर वे लोग जो रेलगाड़ियों को पलटते हुए पकड़े गए थे श्री काका साहब राणे उनके वकील बनकर अदालत में खड़े रहे थे और करीब करीब उन सभी को रिहा कराने में सफल हुए थे । वे एक रचनात्मक कार्यकर्ता थे । उन्होंने उन दिनों में हरिजन छात्राओं के लिए छात्रावास प्रारम्भ किए थे । वे जन-जागरण के कार्य में निरन्तर हिस्सा बटाते थे । कुछ दिन तक पहले वे हमारे सामने बैठा करते थे, फिर हमारे साथ आ गए । शासन का साथ छोड़ना कोई सरल बात नहीं है । लेकिन काका साहब राणे सिद्धांत-वादी थे । वे बोलते कम थे लेकिन उनका मौन, वाणी से भी अधिक मुखर था एक संसद सदस्य के नाते वे विभिन्न समितियों में अपनी योग्यता दिखाते थे । अनेक समितियों में उनके साथ काम करने का मौका मुझे मिला था । मैं समझता हूँ महाराष्ट्र की गहरी क्षति हुई है और इस सदन का एक प्रमुख सदस्य हमारे बीच से उठ गया है । मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ ।

अन्य दो सदस्यों जिनका आपने उल्लेख किया है, उनमें श्री जीनचन्द्रन से परिचित होने का अवसर मुझे नहीं मिला लेकिन श्री भटकर को मैं जानता हूँ । उनके साथ यहां पर काम करने का मौका मिला था । इन सब के निधन से हमारा सार्वजनिक जीवन अकिंचन हुआ है । उनके देहावसान पर हम श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे और आप हमारे ये विचार उनके शोक सन्तप्त परिवारों को पहुंचा दें ।

SHRI H. N. MUKERJEE (Calcutta North East) : Mr. Speaker, Sir, every time we meet after a recess, almost every time, we have to mourn the passing away of some of our Members. It has become almost a routine, but it is moving when people whom we have known closely are no longer on the spot.

Shri Jinachandran and Shri Bhatkar had been Members of this House, and I had the opportunity of knowing them and appreciating their qualities, but I had come to know best of all Shri Rane, whom we particularly miss because only lately he was with us. I have known him since the days of the first Parliament, and as a member of the Opppsition I had many opportunities of getting to know the very special qualities which he possessed because he functioned most effectively as one of the chief whips of the Government party.

I remember him as a man with simple habits but very sturdy character and a certain earthy but stern sense of self respect which came into picture when the lure of a minor office which attracts many of the people was brandished before him but he refused to accept it. At that point of time I thought of him as a genuine son of the

Maratha soil, sturdy, strong and self-respecting. That is why though on many issues we thought and acted entirely differently, I had come to have a very genuine and lively respect for his character and his personality. I am very glad, Mr. Speaker, that you put in the word 'lovable' in referring to him, because if anything he was exactly that.

We miss today Shri Rane and the two other Members whose death we are condoling. On my behalf and on behalf of the party which I represent, I beg of you to convey our condolences to the bereaved families.

SHRI A. K. GOPALAN (Kasergod) : Mr. Speaker, Sir, on behalf of my Group I join in the sentiments expressed by my hon. friends here and request you to send our condolences to the bereaved family.

श्री रवि राय (पुरी) : अध्यक्ष महोदय, आप, सदन की नेत्री तथा विरोधी दल के नेता ने राणे जी, जीनचन्द्रन जी तथा भटकर जी के आकस्मिक निधन पर जो भावनायें व्यक्त की हैं उनके साथ मैं स्वयं तथा अपने दल को सम्बद्ध करता हूँ और यह आशा करता हूँ कि आप शोक संतप्त परिवारों तक हमारी संवेदनायें पहुंचा देंगे ।

SHRI SURENDRANATH DWIVEDY (Kendrapara) : I associate myself and my party with the sentiments expressed by Members while condoling the death of three of our colleagues. Among the three Mr. Rane was a personal friend of mine and was very lovable and sociable. We deeply mourn his death.

I hope you will convey our feelings to the bereaved families.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (हापुड़) : अध्यक्ष महोदय, लोकसभा में सचेतक और उपसचेतक का ऐसा कार्य होता है कि उसे अपने दल के अतिरिक्त विरोधी पक्ष के सदस्यों के सम्पर्क में भी आने का समय समय पर अवसर मिलता है । मैं जब दूसरी लोकसभा का सदस्य बनकर यहां आया तो सबसे पहले मेरा परिचय श्री राणे से हुआ । उस समय वे मुख्य सचेतक का कार्य करते थे । मैंने उनके कार्य करने के ढंग में राष्ट्रीय भावना पाई । विरोधी पक्ष के सदस्यों के साथ मिलकर उन्हें अपना बनाना और राष्ट्रीय प्रश्नों पर उनका समर्थन लेना, श्री राणे की अपनी विशेषता थी । अभी कुछ दिन पहले सरकार ने मेरे सुझाव पर एक सलाहकार समिति बनाई थी कि संसद का अधिवेशन दक्षिण में भी हो सकता है । श्री राणे उसके अध्यक्ष थे । उस समिति में उनके साथ मिलकर मुझे कार्य करने का अवसर मिला । उस समय मैंने देखा कि वे कितनी सरलता से लोगों के साथ मिलकर आत्मीयता से कार्य लेते थे लेकिन हर कार्य करने में और हर निर्णय में उनकी राष्ट्रीयता की भावना छिपी रहती थी—श्री राणे की यह सबसे बड़ी विशेषता थी । अपने जीवन में वे जितना सरल थे, विचारों में उतने ही दृढ़ । इसीलिए उनके सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि वे हवाओं के साथ बहने वाले राजनीतिज्ञों में नहीं थे । आज इस प्रकार के सदस्य को खोकर निश्चित रूप से हम सभी बहुत दुखी हैं । मैं अपनी ओर से और अपने दल के सदस्यों की ओर से श्री राणे और दो अन्य सदस्यों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूँ और चाहता हूं कि आप हमारे ये शब्द उन परिवारों तक पहुंचा दें ।

DR. KARNI SINGH (Bikaner) : Mr. Speaker, the passing away of Mr. Rane and two other colleagues has come as a great shok to us. On behalf of the United Parliamentary Group we wish to associate ourselves with the sense of grief expressed by the leaders of the various parties in the House. We would further wish to pray soul. Almighty to grant peace to the departed Mr. Rane was a very popular man and we shall miss him for a very, very long time. On behalf of my Group, we wish to associate ourelves with the sentiments expressed here and pray to the Almighty that the souls of these departed colleagues may rest at peace.

13.00 hrs.

श्री शिंकरे (पंजिम) : अध्यक्ष महोदय, वर्तमान काल में राजनीतिक क्षेत्र में प्रभावी संयम और कर्मठ निष्ठा दुर्लभ चीजें बन गई हैं। ऐसी भावना जनता में फैल रही है कि आज के आयाराम और गयाराम के जमाने में जो अपनी निष्ठायें बेच नहीं सकता या लम्बी-चौड़ी घोषणायें नहीं कर सकता वह राजनीतिक क्षेत्र के नाम के लायक भी नहीं होता है।

ऐसी परिस्थिति में जब इस सदन में स्वर्गीय श्री काकासाहेब रागे की मूर्ति और उनके आचार-विचार मैं देखता था तो मुझे मूर्तिमन्त संयम और निष्ठवतता का साक्षात्कार मिलता था। रिक्त घट की आवाज ज्यादा होती है लेकिन भरे घट की आवाज सुनाई ही नहीं देती। श्री रागे एक श्रेष्ट वर्ग के संयमी पालियामेंटेरियन थे। 1946 से वे संसदीय क्षेत्र में बहुमूल्य कार्य कर रहे थे। पहले महाराष्ट्र विधान सभा में और बाद में लोक सभा में उन्होंने डिप्टी चीफ ह्विप का काम किया और मुझे विश्वास है कि उनका योगदान बहुमूल्य था।

किसान के कुटुम्ब में उनका जन्म हुआ था। वह समाज की समस्याओं को अपने अनुभव से जानते थे इसलिए उन्होंने किसानों के लिये आस्था से काम किया। शिक्षा के क्षेत्र में भी उनका कार्य बहुमूल्य था। अपनी जलगांव कांस्टिटुएन्सी में वे बहुत सी शिक्षा संस्थाओं में कार्य करते थे।

मैं यहां एक मुद्दई की बात कहना चाहूँगा, और वह यह जैसा मैंने उल्लेख किया, कि वह बहुत संयमी नेता थे, संयमी पार्लियामेंटेरिन थे तथा निष्ठावान भी थे। जब द्विभाषिक बम्बई राज्य के विभाजन का प्रश्न आया और महाराष्ट्र तथा गुजरात दो राज्यों के बनाने की योजना थी, तब वे महाराष्ट्र के ऐसे एक कांग्रेस नेता थे जिन्होंने द्विभाषिक बम्बई राज्य को तोड़ने का विरोध किया था।

आज भी मैं देखता हूं कि जब महाराष्ट्र के बहुसंख्यक कांग्रेस संसद सदस्य रूलिंग कांग्रेस में बैठे हुए हैं तब वह अपोजीशन कांग्रेस में बैठते थे। उनके विचारों का मूल्यांकन मैं नहीं करता हूँ, मगर निष्ठा और संयम के नाते जो उनके गुण है उनका आदर करते हुए मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता हूँ।

MR. SPEAKER : Now, we shall stand for a short while in memory of the departed Members.

The Members then stood in silence for a short while.

13.03 hrs.

POINTS OF ORDER

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (बलरामपुर) : अध्यक्ष महोदय, सामान्यतया आज की बैठक में हम राष्ट्रपति जी का अभिभाषण सभा-पटल पर रखते हैं और अपनी कार्रवाई समाप्त कर देते हैं। लेकिन मेरा निवेदन है कि आज हम सामान्यकाल में नहीं रह रहे हैं। देश में एक असामान्य स्थिति पैदा हो गई है, और उस असामान्य स्थिति का परिचय हमें मिलता है उत्तर प्रदेश और बिहार में। वहां के राज्यपालों ने जिस तरह अपने पदों का दुरुपयोग किया है, संविधान की अवहेलना की है और संसदीय लोकतन्त्र को चोट पहुंचाई है हम उस पर चर्चा करेंगे। यह चर्चा दो रूपों में हो सकती है। हमने काम-रोको प्रस्ताव दिये हैं। आप उन्हें स्वीकार कर सकते हैं। लेकिन यह तर्क नहीं दिया जाना चाहिए कि क्योंकि सदन में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा होगी इसलिए इस मामले को अलग से उठाने की आवश्यकता नहीं है। अभी दो दिन तक सदन में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा नहीं हो रही है। यह मामला गम्भीर है और सार्वजनिक महत्व का